**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# ऋषियों का भारतवर्षीय चिंतन

डॉ0 अजित कुमार जैन, आचार्य
एम0ए0 (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र)
आचार्य (जैन दर्शनम)
एसो0 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
एस0वी0 कॉलेज, अलीगढ़ (उ0प्र0)

संस्कृत वाङ्मय की धारा अनवरत दो प्रकार की प्राप्य है– 1. वैदिक संस्कृत 2. लौकिक संस्कृत।[1] वैदिक काल से लेकर अद्याविध भारतीय मेधा के चिंतन में जन्म भूमि/मातृभूमि के प्रति सहज कर्तव्य बोध, श्रद्धा, पूज्यत्व, माता जैसी भावना पदे पदे प्राप्त होती है।

अथर्ववेद में पूज्य ऋषिवर्य का यह कथन है "माता भूमि : पुत्रोऽहम् पृथिव्या :"[2]। जन्मभूमि के लिए यह मातृभावना अत्यन्त प्रशस्त है। जैसे माता अपने पुत्र के हित का सब तरह से ध्यान देती है, उसी तरह यह पृथ्वी मान हमारे लिए सम्पन्नता प्रदान करें और इस आशय का कथन–"माता पुत्राय मे पयः"[3] वैदिक में मिलता है। कल्याण अंक में भी यह उल्लेख किया गया है।[4] हर प्रकार से यह जन्मभूमि हमारे लिए "योग क्षेमा नः कल्पताम्" कुशल क्षेम दायिनी हो।[5] भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन के वैदिक धारा में भी इस आशय का संकेत प्राप्य है।[6]

यह पवित्र भारत भूमि भाग हम समस्त भारतीयों का गौरव एवं अस्मिता का कारण है। यह जन्मभूमि हमारे लिए अत्यन्त श्रद्धा भाव से पूज्यत्व रूप में अवतरित है। यह कथन हमें गर्व और गौरव की अनुभूति कराने में पूर्ण समर्थ है।[7]

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उत्तरं यतृ समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र संततिः।।

इसी की सादृश्यता का दर्शन महाकवि कालिदास की इन पंक्तियों में दृष्टक है–[8]

"अस्त्युत्तरस्यां दिशिदेवतात्मा,

हिमालयो नाम नगाधिराजः।

.....

.....पृथिव्या इष मानदण्ड।।"

महर्षि वाल्मीकि का 'रामायण' में मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के द्वारा कहा गया कथन संस्कृत साहित्य का रत्नवतृ सुशोभित होता है।[9]

"नेयं स्वर्णपुरी लंका रोचते मम लक्ष्मणः।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गदपि गरीयाती।।"

संस्कृत साहित्य में जन्मभूमि भारतवर्ष को पाकर अपने को धन्य धन्य मानने का भाव भी जाग्रत होता हुआ दिखता है। विष्णुपुराण में यह उल्लेख इस प्रकार से दृष्टव्य है[10]

"गायन्ति देवा किल गीतकानि,

धूव्यास्तु ते भारत भूमि भागे।"

अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त पूर्णतः जन्मभूमि के लिए ही समर्पित दिखाई पड़ता है।[11] वैदिकोत्तर साहित्य में भी सर्वत्र जन्मभूमि केलिए आदर प्रेम, श्रद्धा, समर्पण, पूज्यत्व आदि भावों की अभिव्यक्ति मिलती है।

**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उत्तरकालीन संस्कृत कवियों में प्रायः सभी ने कालिदास, माघ, भारवि आदि ने भी इस परम्परा का निर्वहन अपने अपने महाकाव्यों में किया है।

सारतः यहां पर कहना समीचीन है कि संस्कृत वाङ्मय में जन्मभूमि को मातृवत् पूज्य अहंकर, श्रद्धा, आदर, बहुमान, कर्तव्य गौरव और स्वर्ग से भी बढ़कर बताया गया है। अतः इसकी रक्षा संरक्षा सुरक्षा के लिए यदि अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़े तो भी तत्परता से निर्वाह करना परम् पुनीत कर्तव्य है।

संदर्भ–

1. आचार्य बलदेव उपाध्याय : संस्कृत साहित्य का इतिहास
2. अथर्ववेद – 12/1/12
3. अथर्ववेद – 12/1/10
4. कल्याण – कथांक गीता प्रेस गोरखपुर 2004 पृष्ठ 266
5. यजुर्वेद – 22/22
6. डॉ. मंगल देव शास्त्री – भारतीय संस्कृति का विकास 2010/पृ. 190
7. वायुपुराण – 19/1 वेद कथांक – कल्याण पृ. 262
8. वालिदास – कुमार संभव / प्रथम सर्ग /1
9. महर्षि वाल्मीकि – रामायण
10. विष्णुपुराण
11. अथर्ववेद : पृथ्वी सूक्त